भजन

तर्ज–जिंदगी की ना टूटे लड़ी

सतगुरू बनके आये धनी,आंख वालो ने पहचान की
निजधाम से लाये हमें, लेके जाएगें हमको वही

1–आ के धारा है नासूती तन,अन्दर अर्श की शक्ति पूरण
सुन्दरसाथ को धाम धनी,अर्श दिखलाते कर के जतन
सबके दामन मे बरकत भरी

2–दर्शन करके सुंकु मिल रहा,इस माहोल का करिश्मा है ये
मेहर आपकी लाई हमे,वरना मुश्किल होता मिलना ये
इन जीवो को भी कायमी मिली

3–कुछ भी कहता रहे ये जहां,कुछ भी समझा करे दुनिया
कायम अर्श के नूरे चमन,उतरे शाहे दो आलम यहां
पा गया जिसने माना धनी